बौद्ध धर्म एवं नैतिक मूल्य

प्रोफेसर (डॉक्टर) रमेश कुमार
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास पीजी कॉलेज भुड़कुड़ा
गाज़ीपुर

बौद्ध धर्म भारत का नहीं अपितु विश्व के मान्य धर्मों में एक है। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति आकस्मिक नहीं बल्कि वैदिक युग से वर्तमान तक पूंजीभूत विश्वासों के सत्यान्वेषण का प्रतिफल था। यह धर्म ऐसे काल में उद्भूत हुआ जिसमें मनुष्य की जिज्ञासा युग पुरातन के संचित विश्वासों के आवरण को चीर कर प्रत्येक वस्तु की वास्तविकता को देखना चाहती थी। मनुष्य की उद्भूत तर्कशीलता एवं सत्यान्वेषी दृष्टि के समक्ष अंधविश्वास की प्राचीनता काँप रही थी। कर्मकाण्ड एवं आडम्बर की विशाल प्राचीर जर्जरित हो रही थी। अंधविश्वासों पर संरोपित पुरातन मान्यताएं मानव के सम्मुख निराश दिखाई देने लगी। यह सत्य है कि बौद्ध धर्म ब्राह्मण धर्म के घोर कर्मकाण्ड की बलवती प्रतिक्रिया है। बौद्ध धर्म के उत्थान में आर्य-अनार्य विचारधारा का संघर्ष, ब्राह्मणों का नैतिक पतन, भारत की स्वतंत्र चिन्तनशीलता एवं धार्मिक असंतोष ही जैसे प्रमुख कारक तत्कालीन समाज में उत्तरदायी थी। इस कारण ईसा पूर्व छठीं शताब्दी काल धार्मिक दृष्टि से महापरिवर्तन का काल कहा जाता है। परम्परागत वैदिक धर्म में अनेक कुरीतियों एवं पाखण्डों के कारण चिरकाल से संचित हो रही असंतोषों का चरम परिणाम था। समय की गति के साथ नवीन विचारधारा का आविर्भाव हुआ।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ चार आर्य सत्य एवं अष्टांगिक मार्ग आज के भौतिकवादी समाज की जीवनशैली को जीने व समझदारी प्रदान कर रही हैं। विश्व स्तर पर वर्तमान संघर्ष एवं तनावग्रस्तता से जूझ रहे व्यक्तियों एवं राष्ट्र के लिए एक परिवर्तनकारी मार्ग प्रशस्त करता है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को नैतिक एवं सदाचारिता का मानक ग्रहण कर हिंसा एवं आतंकवाद का सहारा लेने के बजाय संवाद एवं मैत्रीपूर्ण पहल से समस्या से निजात प्राप्त हो सकती है।

महात्मा बुद्ध का मध्यम मार्ग लोगों को संतुलित जीवन जीने पर जोर देता है एवं तार्किक प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर सही एवं गलत का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है। बौद्ध धर्म समस्त मानव जाति को एक समान इंसानियत का पाठ पढ़ाया, ऊँच-नीच, छुआ-छूत का बहिष्कार वर्तमान समाज को अपने तर्कशीलता व विवेक के आधार पर आगे बढ़ने पर जोर दिया जो वर्तमान परिदृश्य में समाज का परिवर्तनकारी परिणाम एकरूपता की नींव रखने के लिए नया आयाम दिया। सामाजिक समानता एवं बन्धुत्व इस धर्म का आधार बना जो समाज के अनेकों वर्ग के लिए प्रेरणास्रोत बना जिसे सदियों से सम्मान न मिला वह सम्मान व स्वाभिमान बौद्ध धर्म को उदय के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ।

महात्मा बुद्ध ने एक ऐसे धर्म का प्रतिपादन किया जो सम्पूर्ण मानव जाति में व्याप्त जातीयता, धार्मिक आडम्बर प्रवृत्त को समाप्त कर एक नया धार्मिक सिद्धान्त जनमानस के सम्मुख प्रस्तुत किया जिसे समस्त वर्गों के लोगों ने स्वेच्छा से ग्रहण किया। इस धर्म में धार्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार की शिक्षाओं का समावेश कर मानव के नैतिक आचरण में सुधार कर एक उत्कृष्ट मानवीय सभ्यता के विकास में सहयोग

दिया। वैश्विक सम्पूर्ण मानव जाति को एक नई सोच प्रकार कर उसके नैतिक विकास पर बल दिया जो समस्त समाज व राष्ट्र के लिए आधुनिक युग में अनुकरणीय रहा।

भारत में उदित छठीं शताब्दी ईसा पूर्व नास्तिक सम्प्रदाय के आचार्यों में महात्मा गौतम बुद्ध का नाम सर्वप्रमुख है। उन्होंने जिस धर्म का प्रवर्तन किया वह कालान्तर में एक अंतर्राष्ट्रीय धर्म बन गया। यदि विश्व के ऊपर उनके प्रभावों के आधार पर भी उनका मूल्यांकन किया जाय तो वे भारत में जन्म लेने वाले महानतम व्यक्ति थे।[2]

अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन आदि राजाओं में जो धार्मिक सहिष्णुता देखने को मिली है, वह बौद्ध धर्म के प्रभाव का ही परिणाम थी। अशोक ने युद्ध विजय की नीति का परित्याग कर धम्म विजय की नीति को अपनाया तथा भारतीय इतिहास में लोक कल्याण का आदर्श समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।[3] अशोक के इस महान कार्य व दूरदर्शी सोच, समानता, धार्मिक सद्भाव के प्रति श्रद्धा भाव रखकर वर्तमान भारत सरकार अशोक चक्र को राजचिह्न के रूप में अंगीकार किया है।

बौद्ध धर्म एवं दर्शन के पंचशील, चार आर्य सत्य प्रतीत्यसमुत्पाद, अष्टांगिक मार्ग, त्रिरत्न आदि सिद्धान्त आधुनिक सामाजिक गतिशीलता और उत्कर्ष को बनाये रखने में सदैव प्रासंगिक हैं।

बौद्ध कला प्राचीन भारतीय कला का वह रूप है जिसने महात्मा बुद्ध तथा उनके द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म का प्रभाव तथा संदेश कला के रूप में अंकित तथा अभिव्यक्त किया गया है। महात्मा बुद्ध के व्यक्तित्व ने कलाकारों के मस्तिष्क को जितना प्रभावित किया था, शायद ही विश्व पटल पर किसी व्यक्ति ने किया होगा।

बौद्ध स्थापत्य कला का विकास भारत तथा भारत के समीपवर्ती पड़ोसी देशों में हुआ जिनसे तत्कालीन समाज में भारत का सांस्कृतिक सम्बन्ध था। इस कला का विकास मौर्य युग, मौर्येत्तर युग एवं गुप्त युग में दिखाई देता है।

इस प्रकार बौद्ध धर्म कला के क्षेत्र में क्रान्तिकारी सिद्ध हुआ। बौद्ध कला दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भी प्रतिबिम्बित और परिलक्षित होती है।

बौद्ध धर्म ने भारत का वाह्य देशों से सम्पर्क का मार्ग खोल दिया। इसके साहित्य को पढ़ने और समझने, इसके प्रचार करने, इसके स्थानों को देखने आदि के उद्देश्य से अनेक विदेशी भारत आये और भारतीय विदेश गये। साथ ही वृहत्तर भारत की नींव डालने का श्रेय इसी धर्म को दिया जा सकता है। इसका जीवन्त उदाहरण जावा का वोडोबुदूर मंदिर है।4

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हम यदि तुलना करें या प्रासंगिकता का अवलोकन करें तो बौद्ध धर्म का भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों के निर्माण एवं विकास में यह महत्वपूर्ण योगदान रहा। बौद्ध धर्म के सिद्धान्तशील, करुणा, प्रज्ञा का स्वरूप वर्तमान में व्यक्ति के नैतिक मूल्य एवं दायित्व के निर्वहन का बोध कराता है जिससे समाज में व्याप्त द्वेष-भाव व घृणा की तिलांजलि हो जाती है। अहिंसा एवं सहिष्णुता का पाठ धर्म के क्षेत्र में पढ़ाया जो भविष्य में विश्व पटल पर अनेकों देशों ने ग्रहण कर लोक कल्याण का आदर्श प्रस्तुत किया।

भारत के साहित्य एवं कला-स्थापत्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। बौद्ध धर्म न केवल भारत अपितु विश्व के देशों को अहिंसा, शान्ति, बन्धुत्व, सह-अस्तित्व आदि का आदर्श बताया। इसके कारण विश्व के देशों पर नैतिक आधिपत्य कायम हुआ।5

छठीं शताब्दी ईसा पूर्व महात्मा बुद्ध ने जिन सिद्धान्तों एवं विचारों का प्रतिपादन किया, वे आज भी वैज्ञानिक युग में अपनी मान्यता बनाये हुए हैं तथा संसार के देश उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं। आधुनिक संघर्षशील युग में यदि बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का अनुसरण करें तो

निःसन्देह शांति एवं सद्भाव स्थापित हो सकती है।

वैश्विक स्तर पर पनप रहे अनैतिक कार्य, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, ईर्ष्या-द्वेष आदि को समाप्त कर एक स्वरूप विकसित लोक मंगलकारी समाज बनाने के उद्देश्य से महात्मा बुद्ध के उपदेश आधुनिकता के दौर में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति की आत्मा सत्य, दया, करुणा, श्रद्धा, अहिंसा आदि है। बौद्ध धर्म ने इसके विकास का भरसक प्रयास किया। बुद्ध अपने धर्म के सत्य स्वरूप को जनता के बीच बिना किसी चमक-दमक के खड़ा करना चाहते थे। इसी से उन्होंने सादगी एवं नैतिकता की शिक्षा न केवल भिक्षुओं को दिया सामान्य उपदेश भी इस पर बल दिया। करुणा के स्वर में उन्होंने दुःखों से दुखी मानवता को दुख मुक्त के ही उद्देश्य से अहिंसा का पाठ पढ़ाया। महात्मा बुद्ध ने बुनियादी पाँच नैतिक सिद्धान्त अपने समान अनुयाइयों के लिए निर्धारित किये-हत्या, चोरी करना, यौन दुराचार, झूठ बोलना और नशा करने से बचना। उक्त उपदेश स्वयं एवं दूसरों को नुकसान पहुँचाने से बचने, जीवन और सम्पित्त का सम्मान करने, पवित्रता एवं ईमानदारी बनाये रखने तथा स्पष्टता एवं जागरुकता बनाये रखने में सहायता करते हैं जिससे वर्तमान परिदृश्य व्यक्ति व समाज दोनों ने ही अनुसरण कर सही मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। बौद्ध धर्म के मध्यम मार्ग विचार का प्रभाव जनमानस पर अद्यतन तक परिलक्षित होता है।

बौद्ध धर्म के सिद्धात आज समाज और देश-दुनिया के लिए प्रासंगिक हैं। वर्तमान परिदृश्य में भगवान बुद्ध के नैतिक सिद्धान्त से सामाजिक परिवर्तन कर संघर्ष निवारण किया जा सकता है। शान्ति व धार्मिक सद्भाव का मार्ग दुर्गम हो सकता है, असाध्य नहीं। इस प्रकार 21वीं शताब्दी के भविष्य के लिए युद्ध निवारण हेतु बौद्ध दर्शन के वैकल्पिक तंत्र के प्रयोग व विकास की जरूरत है। बुद्ध के संदेश सार्वभौमिक व सर्वकालिक हैं एवं सभी के लिए हितकारी है। मानव वर्तमान परिवेश में बौद्ध दर्शन को अपनाकर अपने आचरण, बुद्धि व विचार में परिवर्तन कर समाज में एकता एवं समानता, न्याय, विश्व बन्धुत्व के माध्यम से विश्व शान्ति व सद्भाव का पाठ साकार कर सकेगा।

संदर्भ :-

1. प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन, डॉक्टर शिव स्वरूप सहाय, पृष्ठ 218.
2. The Wonder That was india, A.L.Basham, pp. 256.
3. प्राचीन भारत का इतिहास, के0सी0 श्रीवास्तव, पृष्ठ 836.
4. प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन, डॉ0 शिव स्वरूप सहाय, पृष्ठ 292.
5. प्राचीन भारत का इतिहास, के0सी0 श्रीवास्तव, पृष्ठ 836.

***